पंजी. क्र. S/25125/1993

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

Akhil Bhartiya Rashtriya Shaikshik Mahasangh

ABRSM

केन्द्रीय कार्यालय : शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13, कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799, 9868711893, 9414040403, 9414068780, 9343211679

E-mail : abrsmdelhi@gmail.com, abrsmbharat@gmail.com, www.abrsm.in

पत्रांक: सं.मं. 02/विक्रम संवत 2075 दिनांक: 29/05/2018

गुरुवन्दन कार्यक्रम (गुरुपूर्णिमा, 27 जुलाई 2018)

आदरणीय बन्धु/भगिनी,

सादर नमस्ते।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा देशभर में प्रतिवर्ष एक समान चार स्थाई कार्यक्रम नियोजित किये गये हैं। जिनमें गुरुवन्दन कार्यक्रम गत पाँच वर्ष पूर्व गुरुपूर्णिमा से प्रारम्भ हुआ। इसके क्रियान्वयन के लिए लगातार देशभर में अच्छे प्रयास हुए हैं, इस कारण समाज में शिक्षक सम्मान के प्रयासों को अतीव बल मिला है।

हम प्राचीन भारत के गौरवमय अतीत के प्रकाश में विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि भारत में सदैव ही गुरु परम्परा ने हमें समयानुसार सभी प्रकार की शिक्षा-दीक्षा देकर प्रभावी रूप से राष्ट्र को सिरमोर बनाये हुए हैं। इसमें उनके त्यागमय जीवन के अनुकरणीय आचार-विचार से समाज में श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण हुआ। इसी कारण एक लम्बी परम्परा जो हमें विरासत में मिली, उसी को दृष्टि में रख महर्षि वेदव्यास के प्रेरक जीवन के आलोक में **वर्तमान भारतीय शिक्षक परम्परा** को बनाये रखना चाहते हैं जिसके स्मरण मात्र से ही मन में हम अपने पूर्वजों पर गर्व कर सकें और वे सदैव हमें प्रेरित कर वर्तमान चुनौतियों में से मार्ग निकाल कर सम्पूर्ण संसार में 'कृणवंतो विश्वं आर्यम्' के उद्घोष को चरितार्थ कर सकें। इसी विचार के अनुसरण में निम्न पद्धति से अपने संगठन की सबसे नीचे की इकाई स्तर तक कार्यक्रमों की योजना करनी चाहिए और प्रत्येक इकाई पर इस पत्रक की छाया प्रति (Photostate) भेजकर इसके क्रियान्वयन हेतु अवश्य प्रेरित करें।

ध्यातव्य बिन्दू-

1. गुरुपूर्णिमा विक्रम संवत 2075 (इस वर्ष 27 जुलाई 2018) के दिन अथवा चार-पाँच दिन आगे पीछे भी कार्यक्रम कर सकते हैं। कार्यक्रम -1½ से 2 घन्टे में सम्पन्न करें।
2. कार्यक्रम में शिक्षकगण के साथ शोध छात्र, अभिभावक, शिक्षाविद्, शिक्षा अधिकारी एवं समाज के गणमान्य जनों का सहभाग सुनिश्चित करें।
3. माँ सरस्वती के चित्र के साथ महर्षि वेदव्यास का भी चित्र लगाकर चित्रों पर पुष्पार्पण करें।
4. माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्वलन, तत्पश्चात् सरस्वती वंदना हो। मंच पर कम ही लोग रहें।
5. विषय का प्रतिपादन एक से अधिक वक्ता कर सकते हैं। जिसमें भारतीय शिक्षक परम्परा के अनुकरणीय एक-दो श्रेष्ठ जीवनों पर व्याख्यान हो। वक्ताओं द्वारा वर्तमान चुनौतियों के परिपेक्ष्य में प्राचीन परम्पराओं का स्मरण करा कर आदर्श शिक्षक बनने की प्रेरणादायी आवश्यकता प्रतिपादित करें।
6. हम जानते हैं कि सभी बच्चे घर-परिवार, समाज के व्यवहार/आचरण से सीखते हैं। पाठशालाएं कैसे जीवन गढ़ने में सक्षम बने, यह चुनौती अपने समक्ष है। इन बातों को भी अपने संबोधन में प्रकट करें।
7. कार्यक्रम का संचालन योग्य रीति से हो। व्यवस्थाएं सादगीपूर्ण हो तथा वातावरण प्रेरक बने।
8. मीडिया में प्रसिद्धि हेतु कार्यक्रम के पश्चात् सभी समाचार पत्रों को समाचार एवं फोटो अवश्य भेजे जायें।
9. कार्यक्रम का सम्पूर्ण वृत अपनी इकाई से ऊपरी की इकाई पर अवश्य भेजे जायें। प्रान्त द्वारा सभी कार्यक्रमों का वृत संकलित कर 'दिल्ली केन्द्रीय कार्यालय पर' ईमेल से अवश्य भेजें।

सादर अभिवादन सहित।

भवदीय

(महेन्द्र कपूर)

अ.भा. संगठन मंत्री